

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—ः हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ८२४८ संग्रह २५० (२५०)

ग्रंथ नाम प्रभाग.

विषय

मराठी काव्य.



१९६१०८ २५०

॥ बहुतासि ति ॥ कीवमासी काकुलति  
॥ शो न हेरवे पंछरी ॥ लुका चेरण विरे  
॥ वरी ॥ गा २ ॥ ७ ॥ आत्मप्रासी म  
॥ ति ॥ सुंषुने काकुलति ॥ १ ॥  
॥ आलाहाखवाहाखववा ॥ लुमची  
॥ सांउलेके दोवा ॥ ३ ॥ आत्मची

पंगे ३



Sansthan Mandal  
Sansthan Sansthan

(2)

॥१॥ प्राह्या प्रना॥ नाही नाही ना  
॥२॥ येणा॥३॥ तुकाप्लणे हया॥  
॥४॥ प्रजकरात्मागीया॥ नात्॥  
॥५॥ देवाजेरे सेतरी॥ लुस्त्रो  
॥६॥ रणागलहारी॥७॥ जातानपाहि  
॥८॥ जेकेले॥ श्रीहलडीकेज्ञापुले॥



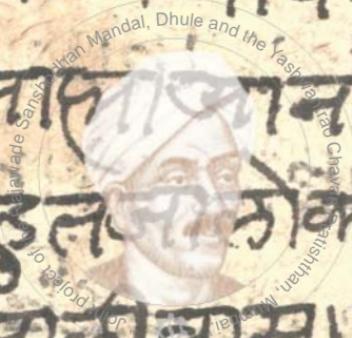
Joint Project  
S. Shodhar Mandal, Bhule and the Yashwantrao Chavhan  
Library, Mumbai.

(20)  
१२। देघाकुद्धनाहिचीत॥ परीक्षं  
॥ णवितो भलं॥ ३॥ मजकोणपुसेरंका  
॥ नापसागरुसेतुआगना आचार॥  
॥ गरुडाचेपाई वेवेवेवेछाऊई॥  
॥ ११॥ वेगीआणाखातोहरी॥ मजदी॥  
॥ नातेउखंरी॥ २॥ पायलधुमीचि  
॥ हाति॥ लणुनि घेतोकाकुलति॥



(3)

॥३॥ तुकास्तेदोषा ॥ आगेकरात्षी  
॥ केशा ॥ गाधा ॥ धावपावगलउ ॥  
॥ च्वजा ॥ आहा ॥ आनांथाच्याका  
॥ जा ॥ ११ ॥ बुद्धतंजी तोकासाविस ॥  
॥ पाहेस्तवेतालीवास ॥ २१ ॥ पाहेपा  
॥ हेयामारगी ॥ कोणयेतोमाझे ॥



(3A-)

॥ लग्नि ॥ ३ ॥ आस्ता निया औस्ता ॥  
॥ तुज सारी खाको वसा ॥ अंतुकं  
॥ ऐच्छाली ॥ चालुन को धावधा  
॥ ली ॥ भ्राड़ ॥ ज्ञे प्रांडी वरी  
॥ ऊरै ॥ ठोवियैला विठंबाई ॥ १ ॥  
॥ प्रार्थी आघवातारी ॥ सीरतुसे



॥ उत्तिसुरि ॥२॥ दांतिधरुनियातृणा ॥  
॥ दुकाल्पेभालेशारण ॥३॥७॥ का  
॥ यतुज्ञिथेरि ॥ वर्णमिपासर ॥४॥  
॥ सिदयाकरहरपा संधु ॥५॥ दुज  
॥ कुले सिदया ॥६॥ आनिकासि ॥  
॥ कुलेकरुसिका ॥ नवलयक ॥७॥  
॥ करुक्षत्रभुमि ॥ वरिपक्षिया  
॥ क्लेमत्रुणासाडीकेलेको ॥८॥

(GA)  
॥३॥ जा क स्मात ते थे र पर्य  
॥ बरो विला ॥ युध्या चाने मिला  
॥ ठाव देखे ॥ ४॥ को रव पाउव ॥  
॥ दलभार हो ॥ ५॥ डुहा वया  
॥ रणी आळे ॥ ६॥ धार डांति  
॥ घोडे रथा ॥ तथा वति ल पा  
॥ इान हो तिल रसत चुप्ति ॥ ७॥  
॥ तया का कि पस्ति ॥ गुडजा



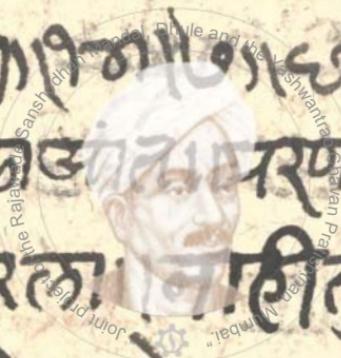
(5)

॥ दधिति ॥ धांवगा स्त्रीपती ॥ लवला  
॥ हे ॥ ४ ॥ ऐसी या सैकड़ी ॥ वांचु कब  
॥ प्यापरी ॥ धाका स्त्रीहारी ॥ लवला  
॥ हे ॥ ५ ॥ जाकुमा गोत्री ॥ केसी जा  
॥ उआतां ॥ पावजग ब्राह्मा ॥ लवक  
॥ री ॥ ६ ॥ यकाज्ञो गे चीया ॥ कंदी चं  
॥ ठाहोती ॥ पडली जावन्दी लिए लया

॥ वंरी ।७०। जाग्रद्विसतेया ॥ मान  
॥ धुम्घजाले ॥ वरेनलागले ॥ उच्च  
॥ तथा ॥ ७१। उड़ जात्याकरी ॥ दाविले  
॥ जार्जुनां ॥ उः तायणां पक्षी  
॥ यारी ॥ ७२। वाह्यामापुल्यां ॥ क  
॥ तासीरहीले ॥ रंगीवांचाविले ॥



॥ कैशापती ॥ १३ ॥ ऐसी दुज माया ॥ जा  
॥ पुल्या मत्ता ची ॥ माउली जासु ची ॥  
॥ दुका सुणे ॥ १४ ॥ ० १६७ ॥ ८१ ॥ जा  
॥ जाज्या मेला उंगत ॥ परणा सीमाला ॥  
॥ तोवरी स्मरला ॥ नहीं दुष्टा ॥ १५ ॥ ग्रा  
॥ ण जाता वेळे ॥ क्षमा नारायण ॥ यासा  
॥ दी विमान ॥ पारं विलो ॥ २० ॥ ऐसी दु  
॥ दुपाकु ॥ नेसी जेमन्नाथ ॥ त्रेलो



(6A)

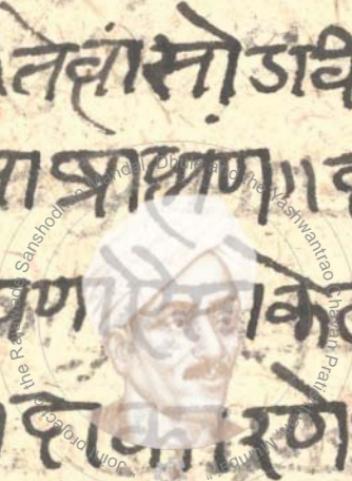
॥ गपसमर्था ॥ सोयरीया ॥ ३ ॥ तुकंश  
॥ णेतुज ॥ वर्णातिपुणे ॥ तोसीह्या  
॥ घन ॥ द्विपासीला ॥ आर्द ॥ ५ ॥  
॥ द्विपावंतादु नाहि तुकापारी  
॥ लाडेबोलेहे ॥ दुखमाता ॥ ७ ॥  
॥ चेतुनिजादुके ॥ लागभीलपाठी  
॥ लाविसीलहाडी ॥ अद्वैतस ॥ ८ ॥

८

(२)

"राखसीलपारव। धालोनिपारवर। उ<sup>१</sup>  
"दासीनघर। द्युमालुतुं। ३। तुकात्रि<sup>२</sup>  
॥णेआला कारणेगो विहावागाविसीग  
॥हा। सुहेण। ४। ४। पतिलभीपा  
॥पी। इंरणजा। ५। राखीमाझी  
॥लाजा। पांडुरंगा। ६। तर्मीयेलेमत्त  
॥नकळेतुसाञ्चात। थोरभीपतिल

॥ पांडुरंगा ॥ ३ ॥ द्विपदीबहिनि ॥ वैमींगं  
॥ जीयेली ॥ तेहांसोऽविली ॥ पांडुरंगा  
॥ ३ ॥ सुदामा आश्रण ॥ हत्तीद्रेषीडी  
॥ ला ॥ म्भापण ॥ केला ॥ पांडुरंगा  
॥ नागलहारा ॥ रण ॥ स्तंबीजा  
॥ बतरा ॥ माझाकांविसर ॥ पांडुरंग  
॥ गा ॥ धातुकाळिणेतुज ॥ द्वोरण



॥ यक्षाभावे ॥ पापनिर्दलवो ॥ पादुरं  
 गंगा ॥ सुमात्रा ॥ पापीश्चणुतनी ॥ आ  
 दवितोपाये ॥ तो बक्षीकाये ॥ त  
 याहुनि ॥ देव विनाश्या ॥ घा  
 लोनिकोडणी ॥ कायचंक्रपाणी ॥  
 निजलेति ॥ यक्षवेळा जाण  
 एउत्राच्या उद्देशो ॥ घेतल्यच्यैक्षे



The Basavade Sanmodin Mandar, Phule and the  
Brahmo Samaj in Maharashtra and Central  
India, C. 1870-1910.

॥१॥ पापनेत्रगदा ॥ तुक्कास्तणे आहे  
 ॥२॥ देवकुंउनरयिका ॥ चीताकासेव  
 ॥३॥ बांग तुमविया ॥ ग १९९ ॥८॥  
 ॥४॥ कायते सामा ॥ त्यालयाकोळे ॥  
 ॥५॥ कायजातीव ॥ रांतीहीव ॥९॥  
 ॥६॥ मासीयासंचीले ॥ आपीला सीहा  
 ॥७॥ जाते तुमावरी ॥ वरी दृहे ॥



(9)

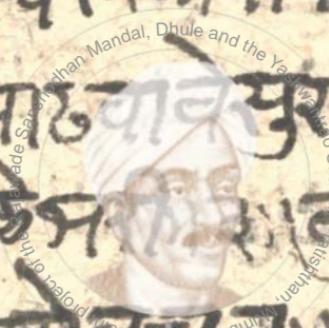
॥४॥ को देग प्राविली ॥ सुहर्दोणग  
॥ हा ॥ याने ए गोवि हा ॥ लाजतसा ॥  
॥ ५ ॥ तुका लाले बाय ॥ श्रीतम्परे  
॥ कास ॥ साउं रोनास ॥ दीनाना  
॥ ६ ॥ अ ॥ अ ॥ १२ ॥ ७ ॥ बोलना ही लुस्या  
॥ हा चुक्कपांसी ॥ जास्तीजावि



(9A)

"॥ स्वारसी ॥ सर्वज्ञावे ॥ १॥ करमती  
॥ सोंगा ॥ दखउयाजना ॥ मांती  
॥ मावना ॥ बेगबीच ॥ नमलुकाला ॥  
॥ देवा ॥ लुका ॥ गीसी ॥ कर्मदुस्त  
॥ रची ॥ जाहु ॥ २॥ १७३॥ ४॥  
॥ स्वष्टुखेचीलुही ॥ सोंगाकिजीसेवा  
॥ ऐसेमासे देवा ॥ मनोगत ॥ १॥

॥ न घो आ छी का गी ॥ जा पुल्या उदारे ॥  
 ॥ चीत वित घरे ॥ जीवा व दी ॥ बोले  
 ॥ परस्पेर ॥ बाहु व चुरवा ॥ पाहु व श्री  
 ॥ मुख ॥ उड़े भरे ॥ तुका स्मणे स  
 ॥ दु ॥ बोलता व चन ॥ करोणि लं  
 ॥ ण ॥ साही तुझे ॥ छ १३ ॥ ५७ ॥ ५०१  
 ॥ कीति लुज पासी ॥ हेतु परी हार ॥



(10A)

"ज्ञाणसिजात्सरा। पांडुरगा। गा। या।  
"तामाज्जेहाति। दैर्घ्यप्राप्तेहीता। क  
"रीप्राप्तेचीत। सप्राप्त्याना। गात्ताग  
"आलाजरी। वा। अनयप्राप्तना। वाऽण  
"प्राप्तविन। बोणबारवी। ३। लुका  
"म्भणेदेवा। न्तराहेलोकीका। प्राप्ते





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)